



ॐ नमः ॥ गणेशाय नमः ॥ गणपतिश्चंद्रमस्तु विद्यिताञ्जलिनायक ॥
द्विष्यन्महागङ्गा महावज्रयत्राक्रम ॥ महागुमहाकायनकदंक्तगङ्गा
ननी ॥ स्तुतवन्महादिकं विनर्गननायक ॥ अक्षमालास्त्रदेवदक्षि
धकत्रजालिनी ॥ यशुनादकयाकुंवा मरुस्त्रविधाप्रिध ॥ नानापुष्पलगाद
व नानागन्धनूपयन ॥ नागयज्ञयविताग नानाविद्यविनासना ॥ ठतासुप्र
मंनूखाक्षसिद्धिगंधवर्तदिगं ॥ विप्राकविद्यिदेसात्रमास्त्रावृट नसास्य
ह ॥ ॐ नमः ॥ गणेशाय नमः ॥ ॥ १ ॐ नमो नानायाय नाय ॥

[illegible]

निरुद्ध कथा प्रथमं मिश्रं प्रविशान्न विष्टं च अर्द्धमग्न क मन्दम् ॥ नागा
त्रेका प्रसवो गी । दादि न न व प्रयदा मृष्टि स्ति मि वि ना सानां सर्व व्या पि स प्रस
त्री ॥ म्वने यषा ज नां द वी । म्वना गी । म्वन वा सि नी ॥ म्वन व स्र प वि ना गी । म्व
का रु प्र न रु वि ना वा ना न स्या म द्वा दे व । ना प्र व द्द नू वा सि नी ॥ आ । य या च स्ति
सा यी ऽि मा ह स्वे ग्री न मा इ म्भु न । ॥ ~~वा ल स्र व~~ म द्वा त्री दी । को मा त्रिः
प्र कृ त्रा च नी प्र कृ त स्र प वि क्षा नी । सि न्द्रां ग्री न वि ग्र हा ॥ च तु रु र जा ष । कि
शू त्री । सि धि या व ध यं गु रं ॥ कू मा त्रं व प्र मं ड कि । म य प्र व ल वा रु नी ॥ प्र कृ य

यात्राद्वी प्रकृमासावसासिधा ॥ कात्रायत्रीमहद्वे वनवृद्धनवासिनी ॥ याम्य
पिठिष्ठिमानित्यं कामात्रीचनमाइसुन ॥ **॥ वृद्धीविष्णुमायावृद्धत्यदः**
वृद्धीनासिनी ॥ दृष्टिगन्धमवाहृगी गत्रुतावप्रिसंस्थिता ॥ गंखचक्रगदा
हस्ताचक्रवद्विस्तृष्टिना ॥ **॥ वृद्धीविष्णुमायावृद्धत्यदः** त्रिगन्धप्रिनी ॥ स्वर्गमध्वच
वागागीस्थितिप्रयदासंस्थिता ॥ **॥ अहं** कामसमलक्ष्म कदंबवृद्धवासिनी ॥ निष्
धियिठिष्ठिमानित्यं नात्रायनीनमाइसुन ॥ **॥ वृद्धीविष्णुमायावृद्धत्यदः**
शामलाद्वी ॥ दंष्ट्राकत्रात्रगंलीता वात्रावृद्धीनद्विनी ॥ कयात्रमासिका
॥ नलकात्रामहाक्रीदानानाहनद्विष्टिना ॥

पाली विविध यथासाहिना ॥ महा महिष ^व ~~म~~ सप्तदा कलिना द्विसप्तपुरा ॥
 मीनी कसकलिका शालागारु नरुषिना ॥ विनय कलिना ददा दृष्टदय
 विनासीनी ॥ अयनि कुरु वसंस्तु न निम्न वृद्ध न वासिनी ॥ नागपिपिस्त्रिणा
 निखं को प्रलयीनमी इरुन ॥ ॥ ~~म~~ ~~के~~ ~~न~~ ~~व~~ ~~री~~ सदसादी कृकमा प्रधविग्र
 द ॥ स्रत्र ~~व~~ ~~री~~ सददवी सदा लंका प्ररुषिणी ॥ महा वदधरा दवी स्त्रि
 मित्रा वना गडा ॥ नाना यथा प्रना दवि नाना प्रलवि रुषिना ॥ नाना गध
 विलि कां गी नाना वरुवी राडिना ॥ च विप्रुच महा देव क प्रक वृद्ध वासिनी

॥ वायुयीति स्मिना निर्ये शक्ये त्रीनुमा इमुक ॥ ॥ चामभुचल्लुकाव
ह्युचल्लुचं छुष्टुप्रिनी ॥ चल्लुहृदहासचल्लुदा पुचल्लुचल्लुनासिनी ॥
दहाकगात्रलकांगी कयिलकभीकयादत्री ॥ कयुगीरुी मयाप्रोदी डिक्का
ललनल्लुषिनी ॥ महापतासमात्रुडा लुडात्रयासमा रुनी ॥ अशितमयना
दुक्का ॥ मत्रुयद्वीगभात्रीनी ॥ कलीकापालदुलाच वत्रदारुयल्लुषिनी ॥ न
त्रचर्मवृतादवी द्वियचर्मकतिस्मिना ॥ सीषमालावत्रोदवी चाल्लुकरुष
ल्लुषिनी ॥ दामात्रकात्रयश अत्रिरुल्लुसदाप्रिया ॥ सदप्रसूयसकाशी

गामक्यपतिपति॥ द्वात्रासात्राक गादहा न दका तिसमय रु॥ रुतव गा
त्रादार्किन्याप त्रितारकू गादसी एकापुकेमहाद्वेष्ट अष्टवद न वासीनी
यी १० उरु त्रसं स्तु न वामधुमये न माहसु न॥ ॥ महा लक्ष्मी महादेः
वीसी लक्ष्मसूत्रसुन्दरी॥ वेदयागादकापूरा सिंहासन स्थिता यधी॥ चतु
स्तुताविशात्राक्षी स्वर्गहृदकधम त्रिणी॥ प्रत्न स्वधु न सवर्वायी चणमसि वि
स्तुषिणी॥ विचित्रयुषा प्रत्नकू वस्तु गंधानूत्रयनी॥ वेप्रा कृष्यायी नीदेवी
सर्वस्तु सवना तत्रा॥ सिद्धिगन्धर्वमसिता चिदाधल सुत्रा चित्र॥ देवीका

~~ॐ नमः~~ रुगवत वासुदेवाय ॥ ~~वृक्ष वाय~~ ॥ विष्णुपञ्चकटिर्वा सर्वदृशनि
वा प्रहं ॥ उग्रतडा मदावीर्य सर्वशक्तिर्कनन ॥ १ ॥ त्रिपुत्रं दनमानं तु व
द्वाष्टां ॐ ॐ वप्रस्कनं ॥ नददं संयुत दामि आत्मा प्रक्ष सदा रुवन् ॥ यदोत्र द्रु
मां विन्द ॐ घया सुनि विक्कम ॥ उदप्रस्थां केशव प्रक्ष कथा ॥ ध्ये वरुना दना ॥ ३
॥ नास्मि शुचूर्णं प्रक्ष गुहं सुवाम न तथा ॥ उदप्रय दाना रुं ध्ये द्रु प्रियं सु
प्र प्रक्ष नि ॥ ४ ॥ वाम वासी नता विष्णु दक्षिणं मधुसूदन ॥ वाक्स्थानं वाम दक्ष
द्वयं श्रुना दना ॥ ५ ॥ कलुषं प्रक्षनुवा जादं कृष्णं शुभं स्वमधुसूत ॥ मधुव

४ कर्मायात्रा दक्षीकगन्धनाशिक ॥ १ ॥ नरु नात्रायनात्रा ललाटगत्र
७ ध्रुव ४॥ कयालकगत्रात्रा वनमंडुवद ॥ २ ॥ धीवत्सवगवेषूत्रा
म४ यत्रा लन पर्वेषुयधु तिकादं आमयंशोधलसुध ॥ ३ ॥ दक्षिणा
त्रासिंदु न सत्यदामादप्रसुध ॥ यत्रा लमत्रा न्या वायु वां पीतवाससा ॥ ४
५ गदाधलुकोचत्रा ससावत्रिननादिना ॥ यात्रा मगत्रात्रा आकाशेषु
दसना ॥ ६ ॥ सनिधमसवगवेषु वविष्ठाविष्णुयद्रा ॥ विष्णुयद्रा ॥
त्राविनादं विडुत्रामसदिना ॥ ७ ॥ जाडदात्रया १० द्वात्र संगममगत्रा निदं
॥ नदीषु नत्रनच व वा घत्रा प्ररुयसुध ॥ ८ ॥ अग्निदग्धनिपात्र

षू रूपाग्रदुविनासनं ॥ दाकिनीरुतयगम् रुरयं नास्ति कदाचनं ॥ १३ ॥ उद्ध
उद्धमहादेव उद्ध उद्धमहच्छत्र ॥ उद्धनु सर्वद्वतानां वृक्ष विष्णु महेश्वर ॥
॥ ॥ ॥ दिवा उद्धनु सूर्यमा गानो उद्धनु चन्द्रमा ॥ सदेव उद्धनु विष्णु सर्व
स्व नजनादन ॥ ॥ ॥ उद्ध उद्धनु वा गानु रूपाग्रदु उद्धनु वामन ॥ अथ गाना
प्रसिद्धनु सर्वग्या उक्तावर्ग ॥ ॥ ॥ कवर्त वासदेवस्य इत्य ० निरुपमा ॥ न
रुरयं नव दामिदं सर्वग्या प्रिनिवापर्ग ॥ १४ ॥ विश्वा ॥ र्थ उद्धनु विश्वा ॥ र्थान्या
॥ र्थ उद्धनु धन ॥ कन्या ॥ र्थ उद्धनु कन्या ॥ भाक्षा ॥ र्थ उद्धनु गति ॥ १५ ॥ अथ

वृत्तस्य न य वृत्तमस्तु इति तस्य न विषयः ॥ कर्म्या (ध) तस्य न कामं विष्णुः प्रकंस गच्छ
ति ॥ ॐ नि विष्णु यं इति तस्य न कामं विष्णुः प्रकंस गच्छ ॥ १ ॐ नमा इति तस्य न कामं विष्णुः प्रकंस गच्छ
द वायः । केना स एषा ल वृत्तः, गुडस्तु टिकस निरु ॥ तमा गुड विहीनो गुड
त्रा सत्य विवर्जितः ॥ सद्यो धर्मस्य दाक्षः सर्वज्ञानकता स्यात् ॥ दृग्नाश्रय
शतत्वा सत्वासीनं सदा जिव ॥ ययच्यु य नता बुद्धाः ज्ञानस्या मतनिगमः
कनायायनदव ग विनायुः स्या मशीरुवतू ॥ तन्मन्त्रु दिम दो दवला कानादि
काम्यया ॥ ॥ श्री सदा निवडवा ॥ नृध्वव द्म नृषव द्म मि विलाय मूनि

सकमः॥ संजातकर्मस्थान व्याप्तिमय विवर्तिनः॥ तस्मिन्कायवधाप्रस
सलिलोद्यमयुग॥ दृगान्तरुयनाभय सुतामैयगिव॥ तस्य संकीर्तना
नित्यं मुनिहिन्यत्युत्तिष्ठतः॥ तमेव किरियद्वन्द्वं नृत्त्युत्थयनमुभयः
सुं नमादं वाचिदः॥ सद्यथा हताम्रः॥ पाहिनामपिनाथस्तु सत्युत्थयन
मासुतः॥ दृदिनां जीवस्तु तासि जीवा जीवस्य काप्रदी॥ उगतां प्रदक्षस्तु
दिनस्य सुयनमासुतः॥ दिमादिमिखरास सुधारी चिमनादः॥ य
सुत्रिकया रास सत्युत्थयनमासुतः॥ नागदात्रमदा मदायारुसवृक्षाने

ककात्रहं॥ यत्रिषाणसिंहाकानीमृत्युःश्रयनमासुगं॥ निरुतायत्रकालेन
सदवासत्रमानुषा॥ गन्धर्वायुत्रसंश्रितसिद्धिविद्याधप्रकृथा॥ साधुश्रवस
वात्रुदास्तथाश्विनीसुतावरु॥ मात्रुताश्रदिश्वनागा॥ सुवराजमास्तु॥ डि
तास्तुइयितवधनांमृत्युःश्रयनमासुगं॥ यथायनियत्रामूलिपूजयन्निन
जादय॥ नरुमृत्युवसंयानिमृत्युःश्रयनमासुगं॥ स्वमकात्रसिवदानाद
वानीशसदाशिव॥ आक्षत्रहादि॥ हाकीनामृत्युःश्रयनमासुगं॥ सुवराज
श्रयीवासावलि॥ मिटदिनि॥ डीवतीस्यादलाकाशमृत्युःश्रयनमासुगं॥

शामसूर्याग्निमध्वरु वासवापिसदाहिव॥ कात्रगयमदाकालमृत्कृष्ण
नमामुह॥ यवृद्धवायवृद्धवत्वंकृगताकसिपुरु। सखिप्रयैदिवगमत्यक्ष
यनमाश्नुते॥ वामित्वंवागमय्यासि नकु॥ सव्वयनकुसी॥ ह्यनिनाह्यनरुगा
इसिमृत्कृष्णयनमाश्नुते॥ कृगजिवाकृगयानमृत्कृत्वंकृगतायुरु॥ कात्रः
क्षंसव्वगीथानांमृत्कृष्णयनमाश्नुते॥ ननस्वमिन्द्रियानां वसव्वह्यनयुवाधक
साखायागव्यदं सभ्यमृत्कृष्णयनमाश्नुते॥ त्रूपातिने वत्रूयवयिदुस्त्वंय
दभवव॥ वतुयागकलाक्षत्रमृत्कृष्णयनमाश्नुते॥ प्रचकवक्रित्रूपासि

साम त्रयासि य धक कुम्भक सिव त्रया जि मरुतु इय नमा इमुत ॥ द्वय कत्राः
सि या यानां पृथ्वीनां वायु वद्वन ॥ त्व रु ३४ य सानि ह्य मरुतु इय नमा इमु
त ॥ त्व म्य वा धस्व मा धा ल त्व वि ऊ लु व न ग य ॥ स त्व न ऊ त्व म या ग मरुतु इयः
नमा इमुत ॥ त्व साम स्त दिन श श्व त्व माना य कृ ण ४ य त्रा ॥ अ स्त वि ष कला ना
थ मरुतु इय नमा इमुत ॥ सर्व दि य गु धा धा न सर्व रु त गु धा धा य ॥ सर्व रु न य
दा न न्द मरुतु इय नमा इमुत ॥ त्व मा त्मा स च य कृ ण स्त गु धा ना म धा धा य ॥
स चानि न्द म या धा न मरुतु इय नमा इमुत ॥ त्व ज रु ४ सर्व य हाना त्व वृ द्धि वा

वनदेना ॥ गवदवक्रत्वमवागुं मय्यक्षयनमाश्नुते ॥ सर्वमायाकलाधरा स
र्वद्विषयप्रायसः ॥ सर्वद्विषयगुणाधीशमय्यक्षयनमाश्नुते ॥ त्रयं गन्धस्थाय
ग ॥ गवदसत्कात्रवरा ॥ य ॥ यकारमतेषी मय्यक्षयनमाश्नुते ॥ त्रुविध्वनीस
हिनांद ॥ उ नं क प्रवधव ॥ रावाहावयविचित्रमय्यक्षयनमाश्नुते ॥ त्वमना
दिननक्तं नित्या नित्यविराजिती ॥ गकित्वमवदवदवम मय्यक्षयनः
माश्नुते ॥ त्वमेकानिष्कला दव ॥ सकलसुखवयवय ॥ अतिसुखीति प्रपह्यं म
य्यक्षयनमाश्नुते ॥ अनक्तकानि सम्यन्तमनक्तानि संस्तुता ॥ अनक्तकानि

सहस्रं गं मय्युक्तं यनमा इमुतं । वाक्का वाक्कस्वयन न्वाप्ये विश्वमननकं ॥ वि
श्वमा विश्वत्रयत्वं मय्युक्तं यनमा इमुतं ॥ त्वदिन ४ यत्र मा विश्वा त्वदिन ४ यत्र
मा गतिः ॥ त्वदिन ४ कप्रदं कर्मा मय्युक्तं यनमा इमुतं ॥ कृष्णं दीर्घकं कर्मा
त्वं कलात्मा कस्य सवन्तः ॥ त्वदिन ४ कप्रदं कर्मा मय्युक्तं यनमा इमुतं ॥ कृष्णं दीर्घकं कर्मा
यत्कृतं प्रादियत्पूर्वस्वामी ॥ यत्र म ४ विव ॥ सदा धर्म ४ यजानति मय्युक्तं
यनमा इमुतं ॥ नववर्षं की कुर्यात्कुरु ४ विवि ४ यत्र सगमानसः ॥ त्वदिन ४ यत्र
ति यावत्कुरु न मय्युक्तं यनमा इमुतं ॥ नाय मय्युक्तं यनमा इमुतं ॥ यत्र कर्मात्मा च लोच

येन ॥ वाधिया नायव च न नो वस गुरु यरु ॥ अस्याम न्न न प्रकाश
जने का वल्लन कर्णे ॥ मस्य न्न जायते नस्य नो गुरु प्रवि मुद्रि ॥ यत्र म्या
य द गम्या वा यो ह्य मास्या मथा यिवा ॥ जगमा वल्लय य सु जगव व सक्तिव
ति ॥ ॐ दं न दस्यं य न म द व स्य द गथा गिन ॥ ६४ स्वप्न ना जने न्यूनं सर्व
त्रि लु वि ना जने ॥ स स्वप्न वद्ध ने निर्यं सर्व द सुत ना जने ॥ सर्व या य विनिः
मा क ॥ मि वला कं स ग च्छति जगव व सक्ति व सु य गु यो नय ति स्ति न ॥
उत्तम उत्तम विपु ॥ यरु म ४ पुत्र व ७३ रु ॥ ॥ ॐ निया न म ५ व न स्त

स्वयं यः स्मार्त्तं समाक ४॥

॥ १७० ॥ नमो रुगवर्गवा सुदवाय ४ ॥

सगानन्द उवाच ॥ नामा चोत्रक ना ४ यस्यापीनातिखलु देहदा ॥ यायाः
निर्याति विलयं पृथ्वं रुवति वाक्ष्यं ॥ ॥ सदानन्द नाम सखि श्वप्रभं न
समस्तप्राप्तियनिकटा, स्त्रीशप्राप्तियनि समस्तप्राप्तियनं, प्रहस्य पदार्थ
कनैर्दं दून, पृथ्वं वक्तुं युत विग्राह्य न तुल्यं धीधकं प्रयास्य वक्तुं श्रुत
लया गत्वं सलदाव, माद्वला वूव ॥ १ ॥ साकथं तुल्यं लोका ४ युजिन
तं दिगानदि ॥ दसे ननायियत्यं गं रु लं काटि गवां ददत् ॥ ॥ समस्त लोक

ह्यनं ७ लक्ष्मीशुकादर्शनयूजाममत्रनायादावच्छानमनीना ७ लक्ष्मीपु
बुद्धनस्तयामागुनकाटिचिसादानस्तेयायुर्धदव ॥ २ ॥ वन्यास्तमान
वासाकायस्त्रियुध्यद्विभोरुवरा ॥ सासग्राममितिथरा ७ लक्ष्मीपुत्यदंभुवो
॥ ॥ (मानयूयूखन ७ वियवियथायससासग्रामसंक्षयनिमित्तिन ७
लक्ष्मीपीयावथरुमियुर्धमीधाय ॥ थयूयूयनिधंन्यधाय ॥ ३ ॥ ७ लक्ष्मी
यावचिखनिधंन्योमत्कनयन्त्रो ॥ कंभवार्थकलायवयापरान्तिदरुण
स ॥ ॥ (गान्धेयूयूखन ७ कंभुयार्कनान. रुमिस ७ लक्ष्मीपयावउसुदी

दायुडाथद्वयादसुमलवधन्यप्रय ॥ ४ ॥ किंकप्रियतिर्नयूक्तमाने
विरुवविरुत्रे ॥ ५ ॥ तुलशीदलद्वयं ॥ ६ ॥ यजितायनदेत्यह ॥ ७ ॥ गवनवमन
नतुलशीयादलनयूक्तयादानयत्रमव्वत्रसं ॥ ८ ॥ सुशुवचु निमिलिनध
नमाचकंरुव ॥ ९ ॥ ॥ श्रीधयागादिगमने ॥ १० ॥ किंरुयकुशिनीवयू ॥ ११ ॥ य ॥ १२ ॥
यन्निद्वयमूलि ॥ १३ ॥ तुलशीयगुनश्रादुसुयूक्तया
दावादथायजनेकनीधयागायादानस्नानयायचुययाजना ॥ १४ ॥ ॥ स म
॥ १५ ॥ लिदलेयुक्तं ॥ १६ ॥ वायदमधले ॥ १७ ॥ वृत्तन्नियूजनयव ॥ १८ ॥ ज्ञानियत्रमागि

॥ गतव्यपुत्रपुनर्मलुसदयकं यलमं प्रसक्तुलङ्गीवृद्धावस्थवाक्य
वधुर्कयप्रसमाद्वनं वनिष्ठय ॥ १ ॥ स्नानदानं गन्धध्यानयासनं
कणवाचनं ॥ उलङ्गीकीर्तनागसिन्धुध्वस्यादधिकं रुत ॥ ॥ स्नानया
यसं दानयायसं स्नानयायसं यत्रमं ध्वल्युक्तायायसं उलङ्गीकीर्तनया
दानादिकयध्वदं ॥ ८ ॥ उलङ्गीनृरुवत्यध्वयकृत्विष्णुव
स्तु ॥ कणवायविचिदित्वाध्वरिणं गन्धदत्तकं ॥ ॥ उलङ्गीयादासं
पूढं वाढ साधियामातनं गद्गाध्वत्राक यत्रमं ध्वनयामगद्गाध्वयुक्ता

यविगुरुसुधायथर्क्या ॥ २॥ हृदयसमूहनिह्ययूजयामियथारुत्रि
नथाकून्यविशङ्कलोमलविनासना ॥ ॥ थगुदिस्मकपदयंतुलनी
सुय ॥ १० ॥ मनुष्यननयः कथा गुरुत्वा तुलनीदत्र ॥ यूननवासदम
यसद्वकाटि तुलनीव ॥ ॥ खदंगसरुवाध्मकपत्रयाव तुलनीव्याया
नलद्वकाटिदतयत्रभस्वत्रसंस्तुष्टव ॥ ॥ ॥ यगुगुदत्रनिह्ययि
यंथियनत्रंशु ॥ मूनयः सिद्धिगन्धवाः यातालेयनगया ॥ ॥ द्रियत्र
मध्वत्रसपियवसु तुलनीदत्रयत्रान्कमद ॥ ॥ थर्ननसपियनि सिद्धिग

धवनागलाकसनसुतियाग ॥ १२ ॥ सुवन्निस्वदवन्नि किन्नराश्च
सत्रसारुसा ॥ कस्यान्निस्वदसंरुगा समुद्रमथयगा ॥ ॥ समुद्रमथन
याकवेप्रशकषुयचलतिनडा यलपूडलशीदवन्नीसमरुसनसुनीया
वं ॥ १३ ॥ त्वमरुमाहउलशीविधुनाविष्कृताश्चय ॥ गमकलसंनवद्वार्थ
केशस्यनिधनायच ॥ ॥ गवनवृद्धेनउलशीमासाकंदसधप्रप्रपायुध्यरु
सनविष्कृतकेशसुत्रभावकवगमकसोचद्वियागा ॥ १४ ॥ त्रापिनागममति
तीप्रस्वयंकषुनपात्रिनाङ्गद्विखातउप्रशीगमपिनीप्रतिद्वनवी ॥ ॥ गम

मति तीत्रसु लुस गी यिया वल्ल दियार वय्यन कषून सारु सुदु प्रगि नी
सवकी जगता ॥ १५ ॥ युरायव्व सवनि छुया उयद भन सत्र रुतीत्र सु लुस
गी यिया थय्यन त्रामच लुन रावन भात्र कर्ल ॥ १६ ॥ वसिखु वचनान्यव्व
त्राम न स नयू तन द गयी ववक्ष थय त्रायि ता लुस गी वरा ॥ ॥ विया ठा त्राम दव
स्य थाय नि ऊन कात्म जा ॥ अ ॥ भक वनि का स थ त्रायि ता स रू सं गता ॥ ॥ त्रा वध्य
न वू स्यं यदा वल्ल स त्राम डा विया गव त्र स गी नान अ ॥ भक वनि का सु लुस गी यि
याय्यन पुन व्व दमव न या त्रा तं ॥ १७ ॥ शं कलार्थ मूमा दवी वू त्रा वें च हि मा

चले ॥ लायिनासतगंरुस्का उलङ्गीत्वानमाम्यदं ॥ ॥ यत्रापूर्वसदिमात्रयः
यच्चतस्र्यावृत्तिन उलङ्गीययायुर्धनमहादेवस्वामिनाम् ॥ १८ ॥ प्रिया (ग
वमिगानिह्यं कात्रममाधवस्य च ॥ त्रयिकत्वगीयद्वयं गंगमकुलसमीपम्
॥ प्रियागवनितीत्रस्रक्षीन उलङ्गीययायुर्धननात्रायमस्वामिनाम् ॥ १९ ॥ ई
श्वकुलसमीपं गुहाविद्यात्रायनादम् ॥ यस्मिन्पत्रमस्यर्थ उलङ्गीत्वानमाम्यदं
॥ ॥ यस्मिन्पत्रमस्यर्थ उलङ्गीत्वानमाम्यदं ॥ ॥ यस्मिन्पत्रमस्यर्थ उलङ्गीत्वानमाम्यदं
स्वामीलाना ॥ २० ॥ सच्चिद्विद्यवनिहिः किन्नरादिः च त्रयिणा ॥ स्वयंभुवम

प्राथम्यं स विना त्वं न भास्सुते ॥ ॥ टव स्त्रीपनिमनं किं न्नेत्र स्त्रीपनिमनं स्त
प्रयं रुद्रि न कयाता तुलशीयी याव रुकयातं ॥ २१ ॥ धर्मा प्रथम गया या
वे प्रापिता पिरि ४ स्वयं ४॥ स विना तुलशी य द्वा स्वमिनादि तमिच्छुते ॥ ॥
थवे थव स्वा मिल संतायक स धर्मा प्रथम स पिरु ह्रा क न रुकयात ॥ २२ ॥ प्रा
पिता राम दर्शन सिद्धि ताल द्वा एव न च श्री नायाया त्रि गारु क्स्व तुलशी दल
कावन ॥ ॥ दल काल वन स राम न तुलशी यिया लक्ष्मी न संख विया डीगा
न निदान यातं ॥ २३ ॥ तुलार्क वापि निग म यथ सा सुषु ग्री यमी न

थेव उलुगीशके दृश्ये सत्रावनं ॥ ॥ समस्त दिनस गंग उलुमथे
उलुगी उलुमला केन संकुनी ॥ २३ ॥ प्रम्यगी किस्किं ध्यायां कथि त्राऊनस
विना ॥ उलुगी वलिना ध्याये गा त्रासु मरुतव ॥ ॥ किस्किं ध्यान गत्रसः
सुगी वने उत्रगी धियायु ध्यान त्राभिभाव कले ॥ २५ ॥ यनम्य उलुगी देवी
सा गत्रात्कमने कर्त ॥ स्वामि कार्येषु दृष्टुं दन मायू न जागत ॥ ॥ दन
मकन समुद्रया लयाय तलस उलुगी नमस्कार या दायु ध्यान त्रका वदा वसा
मि कार्ययात ॥ २६ ॥ उलुगी गहनं ददू विभाषी जाति पातकं सर्वदा म

निष्ठादलं बुद्धदृष्ट्या दिग्भक्तं ॥ ॥ गानपुत्रसुगीयावन रुकासायामा
गुनं बुद्धदृष्ट्याया पापभाक् ॥ २० ॥ ॥ सुलगीयगुगलि संयत्कार्यं शिखरसा
वदन् ॥ गंगसूयमवायाति दग्धं नृहलपुदं ॥ ॥ सुलगीद्वनकागान
वव सौख्ययूतिशिखरसतयान गंगसमात्रदूयाव डिङ्गोसादानवियारुः
त्राक् ॥ २४ ॥ ॥ प्रसीदममदवसि प्रसीदरुत्रिवत्सत्र ॥ क्षीत्रादमथनारुन
सुलगीतौ नमाम्यहं ॥ ॥ क्षीत्रसमृद्धमथनयातदास्यं कृष्यासूत्रीनया
यत्रयुत्रगी ॥ र्थकृष्यापीयमवमद ॥ २२ ॥ ॥ द्वादश्यां जागत्रगीयति

॥ तुलसीसुतै ॥ द्वा वि स द प रा व ग्य द्वा म र्ग त स्य क र्मा व ॥ ॥ द्वा द शी क
 द्वा तुलसीसुतै ॥ द्वा द प र्द सा स्य न ना अ य रा व शी क सु न स द न य ॥ ३० ॥
 य त्या ष यो व न वा र को म रा द्वा क र्ता थ त स र व वि त र य या ति तुलसी प थ ना
 न नो ॥ ॥ तुलसीसुतै ॥ थ या द्वा मा गु न वा र जी व न वृ द्ध अ व स्य स या
 ना या य भा क ॥ ३१ ॥ यी ति मा या ति दे व ग सु भा ल क्ष्मी द द ति व कृ त न र
 म क ना नै श्व र्य वि द्या द द ति व ॥ ॥ तुलसीसुतै ॥ थ या द्वा न श्री क सु स
 तु क र्ता ॥ ल क्ष्मी व द्धि रु व वि द्या स यु व ॥ ३२ ॥ तुलसी नाम मा गु न स
 रु क्षी रु त र द स्या रु स रु वा ना य दे व म कृ क्ति य च्छु ति दे दि ना ॥ ३३ ॥

ॐ

वस्तु रुद्रो नि प्रक मनेव चाकृव स्नेह या य मनेव थने म स प्रळा व हू निरु
प्रभां अ व मान ग्राळा व उन य ४॥ ॥ गुणी हि सद संय क यं छि ने ग
द स क था कृ प्रि सी सद मि य त्व कर्वा नाना व नि द नि ॥ ७ ॥ यु संग य
य रु प्रं गु नि क द्वा व स्व द्वा यं रु प्रं हू नि द्वा डा मि य या य रु प्रं कूल त न
द्वा व थ (थ या क द्वा य अ व ग न व न म रु ४॥ ॥ उ न गानां रु डं ग्या
नां म द्य यानां व दं नि ना सु नि ना ग ड कू या ना व वि स्वा स नि ग ना य ४॥
॥ १ ॥ दाय डा वि डा थ न का व डा कि नी व सु व ग्रा ड व थ ने वः

विस्वा ससं धिया गदाव आयुव गप्रितन विरु।स्यं वनयीव॥ ॥ वेंः
प्रि नां ग रु विस्वा सं यान ल कं उ मि नू नि स व द्वा।ग व् सू फ उ य नि त य नि
वृ य तं॥ ॥ (ग न व् य त्रू य या ग य व विस्वा स या य व मि मा वा ग द द थ्रं सि
मा न का गी द उ नि द्द्र द न वा य व ॥ ॥ व न व न्ना य उ।ग व् वि द्या स
ग्र ह न वृ च आ दा प्र वृ व द्वा प्र वृ य कृ त ऊ स दा रु व॥ २ ॥ व न गः
दा य या य सं वा क्क द का य स वि द्या स न न य व त द्वा त या य सं श्र न
स ल ऊ का त न मा त्र॥ ॥ न गु त्रू स द स मा ना न गु त्रू स द स पि ता ऊ स्मा
त्र वि म दा द्या लं सं सा ल द धि दू हू तं॥ १० ॥ (ग न व् य त्रू य या।मा मः

गुत्रुववुगुत्रुगुत्रुयादयानदसूत्रनहानकावशमूदयात्रयायक्रित॥
॥मानगंगमसमानिथयिनायस्कत्रमवत्रगुत्रुकदात्रसंतिथिमानगंगम
पूनपून॥ ११ ॥(मनष्यपूत्रमयामानिथिगंगमथंववुरुसंपस्कत्र
धातिथिथंगुत्रुरुत्रेकदात्रक्षयातिथिथंमानरुत्ररुयगंगमथं॥ ॥
विद्यात्रयंकूत्रयाधंरुमात्रयंतयस्विनाकाकित्रानास्वत्रंत्रयंनात्रि
त्रयंयुतिवना॥ १२ ॥कूत्रुपदकायात्रुपुरुत्रविद्यानयस्वित्रयात्रुपुरुत्र
रुमाकाकित्रयात्रुपुरुत्रस्वत्रस्त्रीयात्रुयंरुत्रयुतिवना॥ ॥नववि

शासमावधू नचवाधि समाप्रिय नवायस्यसमहिदा नचदेवां नलंवत्
॥ १३ ॥ स्रुंरुं विद्याव तुमद गुरुं वातिव तुमद ह्निनीरुंरुंः
कायस्माचव तुमद वयप्रिंरुं विष्मनाव तुमद ॥ ॥ विद्यापुवाधिः
नामिंरुंराका मिंरुं गुरुंरुं आ तुमं सोखद्वं मिंरुं धर्ममिंरुं पुलनच
॥ १४ ॥ यत्रदंरायामिंरुं विद्यां कुर्यामिंरुं रुंरुं मीत्राययामिंरुं
त्रं उषधि यत्रशक्यामिंरुं रुंरुं धर्मा ॥ ॥ द्वाधिना विखंदद्याश्रु
किंरुंरुंरुं नंरुंरुं वरुंरुं (गाहिदलिदुस्य वरुंरुं न्निवरुंरुं ॥ १५ ॥

न का प्रश्रुत्या समयागता व स्या विद्या ह्यसुत्रं श्रुतिर्ह्यसुत्रं यका वने
या श्रुत्वा वषट्कारं ॥ ॥ अनास्या स्याद्गता विद्या निवृत्ता स रुपा स्त्री क
विष्णु च दत्तं दत्तं रुतदा सैरुमान नृप ॥ १४ ॥ अस्या समयागता व स
या विद्या ह्यसुत्रं वल अ व ल म द य के द्वा प्र य त्वा व स्त्री ह्यल ल
महिं द्य सा व ल रुका व व रु ल सुत्रं उ र्ग व न म रु न द्वा व त्रा जा ह्य
ल सुत्र ॥ ॥ अस्या यज्ञ न विद्वा सा न स्या न च य छि न अं न्द कारे क
लं ग स्य न रु च न्द व स व लि ॥ १५ ॥ गन यूपू त्र य का य न्म रु म स

विष्णुसहस्रनाम ४॥१॥१॥१॥

प्रकावस्त्रनिमरुप्रनावथयाक्कसचन्द्रमामदुगणीथ्यंस्त्रिदुस्यंवनय
वा॥ ॥सर्वप्रिदायकचन्द्रप्रहर्षप्रविदियकनेत्राकदिपकोक्षम
सूयुक्कुलदियक॥१८॥त्राणीयास्त्ररुश्रुत्रचन्द्रदिनयास्त्ररुश्रुत्रस्त्रय
वृत्रयास्त्ररुश्रुत्रसूयुक्काया॥त्रेत्राकयास्त्ररुश्रुत्रधर्म॥ ॥ऊननावा
यननावाऊरुविश्यांयुयक्तुःश्रुदूदागाहयग्रागायश्रुनपिहलस्मः
ना॥१९॥धवऊर्मातिवर्द्धथमयतिपात्रयाकद्वंथववियनिस्रुयस्तत्रवत्रय
द्वंथवविश्यासद्वंमयमदप्रनकवर्द्धथदाद्वंववृक्षय॥ ॥त्रात्रनां

दादवादासातादानादा^{हा}वागुद्यतस्मायुर्वचमिष्यन्नपादयनउत्रालयः
॥ २२ ॥ कायमीताथवसूखनक्षयमर्गवश्रनकदाखनगादल्यर्षतसदा
वश्रनकमुनश्चर्गेनकायकृत्रसनंमिष्यन्नसर्गनंतादत्रयंतयंमाललात्र
लयमर्गव॥ ॥ त्रिचिन्मयायदिस्यातांपुरुषायाकिंप्रयाजनतावाहीकृदि
नस्यातांपुरुषायाकिंप्रयाजन॥ ॥ गानमृपूत्रषनविद्यासंनत्रचिःश्र
स्यासदताप्रज्ञानक्षयप्रयाजनत्रचिःश्रस्यासमदहदावक्ष्याय॥ ॥ प
रास्तुविवाधेसाहेनिजिष्वासहर्गवृषेनितिसावर्द्धिपंपन्नावनिरवत्रय

किं न ॥ २४ ॥ इति प्राकृतं कायका कलपं ॥ २५ ॥ अथ यथा
कर्म मानं यायु ॥ ॥ पथयुक् किमात्रस्य मरुता रात्र्या दृक् कय ० तप्यति
ग्राजा यथयुग्दिने दिने ॥ २६ ॥ वानं मरुतस्य थव कायका दृक् अत्रा मरु
व कायका कं ॥ २७ ॥ अथ यथा कर्म मानं यायु व दिने यत्किं सासु सीदने ॥ ॥ दिने य
कयता कर्तुं किमात्रा पयया कर्तुं चिकियं न नर्तुं धुहि ॥ २८ ॥ अथ यथा कर्म मानं यायु व दिने यत्किं सासु सीदने ॥ ॥ दिने य
॥ २९ ॥ शुद्धस्य दृक् कयता कर्तुं अथ यथा कर्म मानं यायु व दिने यत्किं सासु सीदने ॥ ॥ दिने य

सायकं मूत्रमनाद ॥

षायकं मूत्रमवाह ॥ ॥ नत्रस्या रुन्नेत्र्यं त्रयस्या रुत्तनं गुन गुणस्या
रुत्तनं ह्यानं ह्यानस्या रुत्तनं देमा ॥ २० ॥ मनूषा या आरुर्ध्वं त्रय त्रयया
आरुर्ध्वं मुदा गुदया आरुर्ध्वं ह्याद्य ह्यानया आरुर्ध्वं दमा ॥ ॥

गुनयचु निमात्रपंशी प्रयचु निमाकूत्रं सिद्धि यचु निमाविद्या रुगंयचु
 सिमावनं ॥ २७ ॥ यैत्रमसर्ग गुनत्रेदुने कूत्रमखतणी प्रत्रेदुने विद्या
 मखतु सिद्धित्रेदुने वनमथतदलु रुलयादुने ॥ ॥ अगुनमखतु
 यं अगीप्रस्य रुने कूत्रं अणीदि अरुनाविद्या अहागस्यरुने वने ॥ २८ ॥

गुह्यमदत्तं दातुं नृपयुक्ता प्रकृतं श्री नमो नृपयुक्ता प्रकृतं श्री सिद्धी
रुलनां वविद्याख्यं ह्यलरुत्रं दत्तं रुलमगनां वधनख्यं ह्यलरुत्रं ॥ ३० ॥
गुह्यरुषाय नृपयुक्तां हिलं रुषाय नृपयुक्तां सिद्धिरुषाय नृपयुक्तां विद्या रोगरुषाय नृपयुक्तां
धनं ॥ ३० ॥ नृपयुक्ता आरुत्रं नृपयुक्तां श्री विद्याया आरुत्रं नृपयुक्तां सिद्धि श्रु
या आरुत्रं नृपयुक्तां दत्तं रुलं क ॥ ॥ सुकृत्वा ज्ञायकं नृपयुक्तां विद्या सु
ज्ञायकं नृपयुक्तां ज्ञायकं नृपयुक्तां मित्रं धर्मं निज्ञायकं ॥ ३१ ॥ कं नृपयुक्तां ज्ञायकं
रुलं हिलं कलं पूज्यं ज्ञायकं रुलं नृपयुक्तां नृपयुक्तां नृपयुक्तां नृपयुक्तां नृपयुक्तां

यदास्मिन्नुत्तरेण कुरुक्षेत्रे सप्तमं सः ॥ नात्यश्च जिष्णो मन्त्रना
त्यनिर्मुखां प्रगर्भं वावश्मयः शलाया ना नित्यार्थमदादधि ॥ ३२ ॥
उपायया नदावमन्त्रयत्तु उच्चत उच्चालमया नदावपागार्थं कदावनेमदित
सागरसमूहं वा प्रयायमदित्वा धर्मश्रुथेन ह्यनिर्गच्छं उक्ता गया यमात्रा ॥
॥ भूकनसाक्षयादनपादनश्रुद्धप्रनवाश्रुवध्पदित संकृष्टं दानधयनक
र्मसू ॥ ३३ ॥ दिनयत्ति निर्गच्छं वृष्टं गवायुनं गच्छं पादचिर्न गच्छं
द्वद्वुग्मप्रनं गच्छं ॥ ॥ ऊऊ नानां सदृशं वृष्टं पियी सिकाः

अगच्छो नरकायि यदम कं नगच्छति ॥ ३४ ॥ आसमवस्यं वानसा सवायी
नंदासच्छिञ्जानवाढ ॥ यत्रागमदुस्संवा नासा संपायिनं गप्रदप्ररुक्
उयागयाअर्थन ॥ ॥ धनधन्ययुजागव विद्यागं ग्रहनेषु च आठः
प्रचक्षमिणं धर्ममिणं यत्र न च ॥ ३५ ॥ धनसादाययाय विद्यानयवर्गं
जाय धर्मायाय कायाय धनव प्रदूननवा ॥ ॥ उग्रशुभ्रया विद्यायुक्त
प्रचक्षननवा अथवा विद्याया विद्या त्रुथनापत्ररुत् ॥ ३६ ॥ विद्यात्रायज्ञं
धयं नान उदव उग्रशुभ्रवनयुक्तं निमिधियायुत्थन अथवा धनवि

शाननिशादप्रश ॥ ॥ नकाचस्यदणप्रंयागुप्रमहिमनन. स्वशका नि
सर्तगत्वात्राधुप्रपिषीकयत ॥ ३० ॥ अक्षदचु। गादक्षदक्षंक्षप्रसाप
प्रनिन्दायातसा. सनक्षिद्विवायाकानिसजायत्रपित लिथंवाधुप्रयाः
कजायत्रपीव ॥ ॥ यरुकेयस्ययाधितं नादितं गुदासं निम्नि नसा रुतस
रामभजालगकू. वस्तुय ॥ ३१ ॥ गुप्रयाकमस्यस्य पथिसशास्यं
संकासासु गथंभ्रप्रसा जात्रया नानदवभावाथं सासुसा रुतमाक ॥ ॥
क्षित्यागिलमनाप्रसी। पंछितं मित्रसंगदं अशो लहलकविश्याप्रचि नश्र

कमनिधि॥ ३२॥ निकमी लादा करमी या व्यापारं असमवृय साधूजन
वमिण्याय सासु संयकं धदा नावून पुयान भायमद अक्षाह ध्रुव ॥
नदि ऊन निऊरुता ऊरुत गुहामू च न गुहा गुहात लजांति ययादधि
द्युतं ऊरुता ॥ ४० ॥ ऊन न ऊरुता यमय ऊरुता गुहावन ऊरुता गुहायत्रि
दाया रुता वदद ध्रुव ध्रुव ऊरुता ॥ ४१ ॥ किं कून न विसात्र न गुहात य
त्रिना न वन वन विसूक्ष्माय नि गुहा किं कप्रियाति ॥ ४१ ॥ कूलहिदान
कूयाय (ग) कूया गुहा रुता न ध्रुव ऊरुता कनमान याय व धन वं गता ज्ञा

याकायथश्रुतं निगुह्यतश्नुनाव ॥ ॥ किंकृत्रं न विभात्रं न विशादि नो
सुयानत्र श्रुतं न विवि द्वासा देवदेवापित्युक्तं ॥ ७२ ॥ (गाम्नेमन
य कूत्रवने रुवयान नृपुया जन विशा गुह्य साक सत्रसा श्रुतमीश्वर
संनं गथ देवपूजाया गं श्रुतं पूजाया यवा ॥ ॥ नाताधिचरुवादि
जाव गूल्यात्रं न गच्छति उति (स्त्व गतयात्र ॥ नोकायादियया जनं ॥ ७३
॥ विशाश्रुतं नाम उा उत्र समुद्रयात्र मधूनात्र नाम गत्र पितृ समुद्रय
नयाय धूनढाव नाम या च्छुपया जनं ॥ ॥ गुह्य सर्वपुत्रं न वि

रुच। गानिसर्थक वासुदेव नमस्येति वसुदेवनपूजया ॥ ५९ ॥ तिरुव
नसुयुविकरुका पूजायात वव कायधायमदु गुधथलन नाग्रायनदी
समस्तस्य पूजायात गुधमध्वन नाग्रायनया वव वसुदेव चक्रस्तन
पूजामयाक ॥ ॥ गुधकूवन्तिदूतत्वं दूतयिसनासनां कनकिगन्धः
माद्याय स्वयंगच्छतिषदा ॥ ५१ ॥ गुधावनकवाढाथाय ससाधूजनवा
ढाथाय धरुत्र गायानत्रानसांगालयकनकिस्वानस रुमत्रवान् श्रथ
शोककानिव ॥ ॥ विशालेवनपत्वंचनदिगुत्रयगकम सुदगपूजिताग

आविद्यासर्वव्यपिकम् ॥ ७४ ॥ आकाशाविद्यासर्वव्यापिकाविद्यामद्वैताकाश
प्रथमवदसहकाशपञ्चायाय विद्यासर्वव्यापिकागनावानमात्राज्ञानमानयायव
॥ ॥ नृकनपि संपूर्णविद्याय कनसाधना कुर्यात्पुत्रस्वसिद्धिं न च नृक
वयकास्य च ॥ ७५ ॥ संपूर्णविद्यावक्तृसाधूयादकुरुत्पुत्रस्वगाथच नृक
किप्रनार्थं किलिदयदहवत्तु कुरुकायनगाक ॥ ॥ विद्यायासुजनं
कश्चि कश्चिद्वीथ्यसुजन उरुयासुजन कश्चि कश्चिनाहयसुजनं
॥ ७६ ॥ गमसिद्धिं न विद्यायाहंदात्र गमसिद्धिं न विद्यामसवद्वय

प्रणिप्रिचिर्न विद्यामसवद्वयमथप्र॥ ॥ नमस्किरुप्रिनावद्वानममि
गुप्तीजनो गुर्केकावमूर्षवृहिटर्ननचमन्यन॥ ९२ ॥ स्यसवसिमान
भवनमस्काप्रयाक मस्वयत्रयमजित्व नत्रयनवर्क मजित्वकृयाय॥ ॥
नदिकर्मसिचत्वाल्लि संक्ष्म काप्रयथाजनप्रादुर्गमिथूननिन्दानथस
क्षायमेवच॥ १० ॥ ध्वयनासंक्ष्मसमन नय र्दुर्नमेथूनस न ध्वयनामीत्र
र्मात्र॥ ॥ प्रादुर्गजायनवाधिहृत्कृत्त्रयजायन अत्रक्षीय्यशयाः
यास्याथदायकाद्वय॥ ११ ॥ नियानवाधिदयूकीदायानसागरुस

महिनयू॥ दनसालक्ष्मीमदयूपाधयानसाअयूक्षय॥ ॥ वंदवदीः
गनत्वसूत्रपदामयगक्रम आशितवादयगनीर्यत्रकगस्रायगीदिता
॥ १२ ॥ (गमक) वापूदा वंदंगतत्वस्यवत्रपदामसंव आशितवादवियद्व
वत्राजयायाहितथधिवत्रकवानयाय॥ ॥ याह्रासिष्ममदियाः
लच्छिदकामविवजितंविधूत्रवयत्रियागीसमदृषसमसुखं॥ १३॥
ह्रानिकामत्रीच्छिदवचनमद्राक आपदासत्यागीदृषसुखंसेवथ
क्षेत्राजायाय॥ ॥ कूलगुनसि त्रयेतुसत्यधर्मयगायनपवित्रयग

प्रादक्षिणाक्षी विधियर्तुः ॥ १७ ॥ कूर्चवन्कशीरवन्कगुहवन्कधन
वन्कधर्मिकचउत्र विवर्द्ध ॥ द्दमावन्कथथीग्वर्द्धग्राज्ञायाम् ॥ ॥
कूर्चयसनिनालद्धमपगुरुसदाङ्गवञ्चनायवसकगालनाधिपस्य
नियाम् ॥ १८ ॥ काधि. वसनि. प्राहि. अह्नानि. आयमसास्यवययाक
थथीग्वर्द्धग्राज्ञायामवन्क ॥ ॥ मूर्चवन्कहि धालसर्वलनापि विदु
क. उविग्ववहागाम्य. धर्मिक्षाक्षी विधीयर्तुः ॥ १९ ॥ कूर्काङ्गुनाङ्ग
काङ्गसमसुगर्हय विदु. गायक. व्यवहा. त्रयाकथ. धर्मिक. धाय ॥ ॥

आयुर्वेदकृता स सर्वरूपी यद्वान् आर्जुनीय गुणायत प्रक विद्य
विधीयते ॥ १० ॥ त्रिगुणादिन वेदशास्त्रसर्वनादिष्वद्वयं साकवतुवः
गुणवन्तः प्रक वेदप्रकायः ॥ ॥ चिरयिता महाददा ॥ ॥ मिष्टया
वक्त्रुचिग्वकथितवत्तुपकात्रयसंस्थानं ॥ ॥ सख्यदकगुरुता
थलायुदस्तादितात्र सर्वसास्त्रसमाप्ताकि प्रक प्रवक्तुवः ॥ १२ ॥ च
पात्रकासु न संवर्गीयत त्रायस्त्व अक्षय्या समस्तुदव समस्तु ॥ ॥ ॥
अस्यासया कथं प्रवक्तुवः ॥ ॥ ॥ मिताकात्रसर्वरूपी यद

नर्न अयमादि सत्रादक पुनिरा तसु ३ अने ४॥ ४० ॥ कार्य या अनूसा तस्यः
व व व व न ग क व व व य मादि मरु व वि च द न य न्द्रि रु य त प र व धी र्ज
व न ग र थ य म न्की ध य ॥ ॥ स म स र स र स र वा र न व य म डि नाः
स म र वि र गु स प न अ स वि द्वा वि धि य न ॥ ४१ ॥ स म स ग र्ग म स र थ
व व र स न स व स र उ ध व न थ द्वा अ स वा त या य ॥ ॥ म ध विः
वा क र य रा ह्या प र चि न्ना य र द क धी रा रु थ क वा दि न क द टा वि धी
य न ॥ ४२ ॥ ह्वा नि व र न य र न य र वा ध या क रि र्ग उ द्वा क थ

मोदगच्छाय ॥ ॥ याधिवस्यचरस्यचक्रामिगुनप्रद्वनश्चसंव
दंष्ट्रायाजाहंभुगानेतथेवच ॥ ५७ ॥ राजाडागभवन्गुणप्रद्व
नज्ञासदावध्वदंउजावननराज्ञानवृद्धिमानयार्डाप्ररुधुमी
भर्या ॥ ॥ अगजककूत्रीजानांदयाकूचनिसगृहाश्रुदिसधसमा
न्यकूनर्वाशस्यतिविक्रया ॥ ५८ ॥ ॥ धसनिज्यययादकसवन्करुधु
हियादश्रुदिसधअनर्मविक्रीसंमवाढा ॥ ॥ पंष्टिर्नयुगुक्षसर्वमू
खादीखाखुर्कवरागम्भामूर्खसहप्रदश्रुद्वकयुगसंन ॥ ५९ ॥

गुधसमस्त विचक्षणन ह्यनिर्भयार्कजगुन समस्तदोखन धनन मूर्खदा
ले छिः। सनाव ह्यनिर्भयार्कजगुन समस्तदोखन धनन मूर्खदा
नि रा ह्यगुयगुधससस्वर्गनिवासस्य पूषा प्रथमनागमः॥ ७० ॥ ह्यनि
र्भयार्कजगुन समस्तदोखन धनन मूर्खदा
पति लक्ष्मि वृद्धि रुय ॥ ॥ मूर्खनिर्भयार्कजगुन समस्तदोखन धनन मूर्खदा
यश्च धनार्थनास्य न प्रकयग धनवर्तः॥ ७१ ॥ मूर्खनिर्भयार्कजगुन समस्तदोखन धनन मूर्खदा
गजगुन रुय राजायता जयकिलिख ज्ञायु लक्ष्मी मायु परगुन सकवनि

व४॥ ॥ तस्मात्सुखं श्रुत्वा नित्यं धर्माकार्थं वृद्धिं या युधवन् निरुद्धं
न युधदिनं विवदितुं ॥ ८८ ॥ धर्मनामसंज्ञं प्राज्ञानं धर्माश्रयकामया
यनं युधवन् याज्ञस्येमात्रं युधदिनं कृतं सत् ॥ ॥ यत्किंचिन्कृतं तत्
एतत्सुखं वायदिवं सुखं न संवदन् प्राज्ञा सुखं न दूकृतं पि४॥ १०॥ युधवन्
याज्ञस्यानधकूनं सुखादानं सुखादानं सदा वृद्धिं यायु४॥ ॥
अथ हं मयि त्रिदशं नायना न च दने न तथा पूत्रं व मया त्वं कृतं मित्रं न
कर्मना ॥ ११ ॥ गाथं त्रयं त्रिदशं यादार्थं चूयं दायं नाकदने थार्थं कू

लस्रहावन यत्र वयत्रि द्वायाय ४॥ ॥ इति नवमं पुस्तकं हस्त्यत्रा वयस
मागभी आपत्तात्र तथा मित्रं हा अत्र विरुव द्वाय ४॥ १२ ॥ उगभवनया
दिनसाय अत्राया सऊनया दिनसाय आपदास स्त्रीया दिनसाय धनमद
नदाव ४॥ ॥ हस्त्यावद्वि विषयाऊं उरुमाधनमधमां ननिया अत्राया
आह्वागि विषयनवकमसि ४॥ १३ ॥ उगभवनहिंदमहिंद अर्नकमा
लहिं अहिंदथासनय महिंदमहिंदथासनय ४॥ ॥ अत्राया मूरव
लंकुनं गद्वयसनिसंथा अत्राया उरुमनेह अत्राया हस्त्यनत्राविषया ॥ १४

श्रुताभी न्वाय नव, श्रुत वसन सरुयि, विकानमंगलक थापि श्व उगभवन
नाज्ञानत्वदत्तमात्र ॥ ॥ एतन्नामिनमात्युग्रं मत्पूतं कृपन नैक नृक
यनादविश्याय हूतस्मात् कृपनासनं ॥ १५ ॥ अति उग्रमश्ववस्वामिः
मात्रतमात्र उग्रमश्ववदाव, कार्यहि श्व महि श्वमश्विप्रदाव नो लनमात्र ॥
॥ ॥ वामाहायास्त्रिणा मूर्ख यस्त्वका वागीचात्रक निश्चवंधूवसमश्व, नैक
तस्य मरुसूखं ॥ १६ ॥ विरागिमतिक्रु मूर्खकाय, श्रुताया गुमयाकः
मीसा, ह्रीमदसर्जन थमत्वलान मरुसूख ॥ ॥ नकस्त्रिक्

स्य विमीश न कश्चिन्क स्य विपीया का प्रजाद वरा र्थेन मिशानि सुयवस्तु
थम् ॥ ११ ॥ मिन्दयू सङ्गनदयू का प्रजातः शुद्धयौ का सनाना ॥
काङ्क्षि रुद्रमयी क नरा कयस मायत वसद्भय द्ययं दस्य पत्रितङ्गिमा
गुत्र ४ ॥ ॥ कार्यया मनुखा सनत्रा क रुद्रययं व गाथ ले धप्रसा धनवान
ददुतो न्यमदया व माम लदतः ॥ ॥ कृत्व वा संमिता निन्दुः प्रह कस्तु
कृणो लति कृणो सो र्यो दप्रि दुस्य दङ्गनस्य कृणो द्दमा ४ ॥ १२ ॥ धं सनसत्र
न क रुद्रमयी द्दुद मद् एफि मद् वया लनि मद् दसि दुया सुख मद् दङ्ग
नया दयामद् ॥ ॥ नस्तु तस्य कृणो मान्या दङ्गनस्य कृणो द्दमा वंशायनाः

कृणुह्येह कृणुसस्यं च कामिना ॥ ८० ॥ स्वयात्कामान् स्वमदं दुरुनयात्
कृणुमामदं वंश्यात्तु यात्कसिद्धमदं कामियात्कसस्यमदं ॥ ॥ द्वेष्टे त्रयं व
शो शक्रा वाशानां त्रिदिक् वंशं वंशं मूर्खस्य भीनायं शीतनां मममर्गं वैलं ॥
॥ ८१ ॥ द्वेष्टे त्रया वंशं शूरा वाशवया वंशं शूराय मूर्खया वंशं शूरा
नानमवास्यवान्य स्वयात् वंशं शूरा रु सखा शूराय ॥ ॥ अनाथानां दमि
दानां वाशवद्वंशं तपश्चिनां अन्यायं पत्रिस्तु नानां सध्वं स्वायाथिवागानि ॥ ॥
॥ ८२ ॥ गतिमदं कासन वाशकया ददया तपश्चिना थर्नेया गति शूरां गाश
॥ ॥ याधितस्याथदिनस्य शक्रु चिना निनस्य व ददयस्य कदं न्यस्य सुद

दर्शनमोघनं ॥ ८३ ॥ या विनपिष्टुत्रयं वाग्नाया गुरुवत्त्वा दया धनाभा
संजा दयाद्दयमदस्वदसंजा दया धनया उखवि पासधि थी स्वातः
सीयावशा ॥ ॥ अत्रैवमनसा फंदहिष्य गुरुविग्रहं नाशद्वारम्भा
मानसं जगिष्ठमनिवांधवा ॥ ८४ ॥ याया इन्द्राव आदार्वसस्तिवा
सेया कर्म्म नयमदरे विचारया कर्म्म गुरुविग्रहसं नाशया दसिह
त्रदास्यं सममानसं धर्मसतिवात्रया कर्म्म पासाक्षयश ॥ ॥ हावसूद्धिमन
याना ह्मागयां सर्वकर्म्मसु हावसूत्रम्विताकां न हावनेदहिनामना ॥ ८५
मनसाया कर्म्मसु त्रसनं हावमानसिद्धिशने स्त्रीचूंवरयं द्वावयास्वा

लसुम्भत्रयं हवस्तथा ॥ नदवविश्वर्गकाष्ठपाखाननत्रमुन्मये ह
 वष्विदन्तदन्ततस्मात्तवमहकुरं ॥ ६६ ॥ त्रादा सि त्रासु थर्गेनदवताम
 हव हवमागुन दवता कुरं धर्गेन हवस्वतव ॥ ॥ गिष्या नादवतायाः
 यो हानमात्रार्थदवता दवताया विना रुका वाक्मनर्जनदवता ॥ ६७ ॥
 गिष्याया गुप्दव गुत्रयादव हान कुयादव थवयूस्व त्राकयादव वा
 क्मन ॥ ॥ त्रियुपस्थ जथावद्वि त्रावाये स्वदवता वृषितस्त्रुथामान मि
 गुपस्थ जथावत ॥ ६८ ॥ बुक्मनस्वयन्मग्निदवताये गुप्स्वयदवताये माम
 स्वयमृथि (थे) कायस्वयमिन् (थे) ॥ ॥ गुप्स्वग्निद्विजानिना विद्वन्नां वा

५६

भूमीयुग्मं यतिश्रीकोयुग्मं सर्वस्यास्वागन्तुगुग्मं ॥ ५२ ॥ वाक्कनवा
 देवशक्तिश्च उच्चैर्हूया देववाक्कनस्फुरा देवधवयूग्मं समस्तया देव
 अस्वागन्तु ॥ ॥ उक्तमस्यापि वक्तुं न्यायिगुह्यमागन्तुं प्रकृतिया क
 थान्यायं सर्वस्यास्वागन्तुगुग्मं ॥ २० ॥ हि कृत्वाति महि कृत्वाति इत्यस्य
 कृत्वाति वक्तुं यथायमात्रं सूयासिनां नवकादश्चास्वागन्तुगुग्मं ॥
 देवतायुग्मं रुक्मं ह्ययादानं नयुग्मं गूढं यथायकारं न विद्यानां महि वन्द
 ने ॥ २१ ॥ देवयुग्मं यथायमात्रं उक्तमवन्तयुग्मं यथायकारं न विद्यानां महि वन्द
 युग्मं यथायकारं न विद्यानां महि वन्द ॥ ॥ ०० निदानकं ॥ कसमाय ॥ ॥ उक्तु